IJMSERH

International Journal of Multidisciplinary and Scientific Emerging ResearcH (IJMSERH)

Volume 13, Issue 1, January-March 2025

Impact Factor: 9.274

ROAD
INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
doi
Crossref

International Journal of Multidisciplinary and Scientific Emerging ResearcH (IJMSERH)

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

नवलगढ़ तहसील में जैविक कृषि अपनाने की प्रवृत्ति और चुनौतियाँ (क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित मूल्यांकन)

कपिल स्वामी[1] प्रो. (डॉ.) एम. एम. शेख[2]

शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान)[1]
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान)[2]

सारांश

राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि और संबद्ध क्षेत्र का योगदान देखा जाये तो वर्ष 2011–12 की स्थिर कीमतों पर वर्ष 2020–21 में सकल राज्य मूल्य वर्धन (जीएसवीए) में इसका हिस्सा तकरीबन 30 प्रतिशत रहा है। पिछले दशक के आरंभ में कृषि और संबद्ध क्षेत्र का हिस्सा लगभग 22 प्रतिशत से बढ़ते हुए अब कोरोना के कारण 29.5 प्रतिशत हो गया है। हालांकि वर्ष 2015–16 से 2019–20 की अवधि के दौरान राज्य के कुल जीएसवीए में इस क्षेत्र का हिस्सा लगभग स्थिर रहा है। वर्तमान समय में जनसंख्या का जब तीव्र दबाव पड़ रहा है तो यह भी आवश्यक हो चुका है कि हम परम्परागत कृषि पद्धति को साथ रखकर ज्ञान व तकनीक के आधार पर ऐसे कार्य को महत्व दे जिससे राष्ट्र का विकास तीव्र गति से हो सके साथ में पर्यावरण की भी गुणवता बनी रहे।

नवलगढ़ तहसील, जो झुंझुनू जिले की एक प्रमुख और भौगोलिक रूप से विषम तहसील है, में यहाँ कृषि से ज्यादा पर्यटन स्थल आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। फिर भी तहसील के कुछ भागों में जैविक कृषि का कार्य स्थानीय कृषकों द्वारा किया जा रहा है एवं स्थानीय संचालित मोरारका फाउंडेशन जो कि जैविक कृषि का एक अग्रणी सस्थान है ने इस क्षेत्र में जैविक कृषि के विकास और उठान को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया है, जहाँ कृषि आज भी पारंपरिक विधियों पर निर्भर है। चूँकि इस शोध का विषय नवलगढ़ तहसील में जैविक कृषि कि संभावनाओं को तलाशना है। प्रस्तुत शोध–पत्र में तहसील में जैविक कृषि के स्तर का सटीक आकलन करने के लिए किए गए क्षेत्र सर्वेक्षण के माध्यम से संकलित किए गए प्राथमिक आंकड़ों का विश्लेषण प्रस्तुत कर तहसील में जैविक कृषि के प्रति स्थानीय कृषकों के दृष्टिकोण, जैविक कृषि अपनाने का स्तर, इसकी प्रवृत्ति एवं जैविक कृषि कार्य के दौरान अनुभव की जाने वाली समस्याओं आदि का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

मूल शब्द : कृषि अर्थव्यवस्था, पारंपरिक कृषि पद्धतियां, जैविक कृषि, जैविक उत्पाद प्रसंस्करण

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

परिचय :

पिछले 40–50 वर्षों में बढ़ती आबादी ने मानव जीवन और कृषि आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था का संतुलन बिगाड़ कर रख दिया है। पेट भरने के लिए परम्परागत खेती रासायनिक खेती में तब्दील हो गई। रसायनों ने मिट्टी के लाभदायक जीवों का नष्ट कर दिया इससे भूमि प्रदूषण को निरंतर बढ़ावा मिल रहा है और जमीन की प्राकृतिक एवं जैविक उर्वरता कमजोर होते होते मृतप्रायः हो गई। वर्तमान में भारतीय कृषि संक्रमण काल से गुजर रही है। हरित कान्ति के दौर के बाद अब खेती का उत्पादन दुगुना करने के लक्ष्य के साथ हमारी यह भी जरूरत है कि खेती का व्यवसाय लाभदायक हो और उसमें टिकाउपन भी हो। यही कारण है कि अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के दौर में लगभग सम्पूर्ण विश्व में इस समय ओर्गेनिक फार्मिंग (जैविक खेती) एक नये विकल्प के रूप में सामने आया हैं। इस अनुसंधान का प्राथमिक उद्देश्य नवलगढ़ तहसील में जैविक कृषि अपनाने की प्रवृत्तियों का गहन मूल्यांकन करना एवं उनसे उत्पन्न प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना है।

अध्ययन क्षेत्र :

नवलगढ़ तहसील जिले कि समस्त तहसीलों में अपना विशेष महत्त्व रखती है। नवलगढ़ तहसील 27^0 58′′ उत्तरी एवं 75^0 47′′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह राजधानी जयपुर से लगभग 180 किलोमीटर दूरी पर है एवं जिला मुख्यालय झुन्झुनूं से 68 किलोमीटर है। यह शहर, सड़क मार्ग द्वारा अपने चारों तरफ स्थित सभी मुख्य स्थलों से जुड़ा हुआ है। इस शहर का समीपस्थ रेलवे स्टेशन चिड़ावा है जो 38 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में स्थित है। माध्य समुद्रतल से नवलगढ़ तहसील की ऊंचाई 425 से 485 मीटर है। दक्षिण में नवलगढ़ शहर से लेकर उत्तर में तांबा परियोजना कॉलोनी तक के सम्पूर्ण 10 किलोमीटर तक के क्षेत्र के पूर्व एवं पश्चिम दिशा में ऊँची पहाड़ियां है। पहाड़ियों की ऊँचाई पश्चिम में 500 से 800 मीटर है तथा पूर्वी पहाड़ियों की ऊँचाई 500 मीटर से 600 मीटर तक है। नवलगढ़में अधिकांश भाग बेलनाकार पहाड़ियों का समूह है और अरावली श्रेणी की कुछ शाखा दक्षिण–पूर्व दिशा में जाती हुई दिखाई देती है। अरावली पहाड़ियों की एक श्रेणी उदयपुरवाटी तहसील के दक्षिणतम जिलो में प्रवेश करती है और पूर्व में सिंघाना व नवलगढ़तक फैली हुई है। शेष भाग सामान्यतः रेतीला है और थार के मरूस्थल का हिस्सा है। नवलगढ़ तहसील की वर्ष 2001 एवं वर्ष 2011 की जनसंख्या के आंकड़ों को निम्न तालिका में दर्शाया गया है। तालिका के अध्ययन से तहसील में वर्ष 2001 एवं वर्ष 2011 की जनसंख्या का तुलनात्मक अध्ययन भली भांति किया जा सकता है। वर्ष 2001 के तहसील के जनसंख्या के आंकड़ों को देखें तो ज्ञात होता है की तहसील में वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 291919 थी जिसमें से पुरुष जनसंख्या 148163 जबकि महिला जनसंख्या 143056 थी।

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

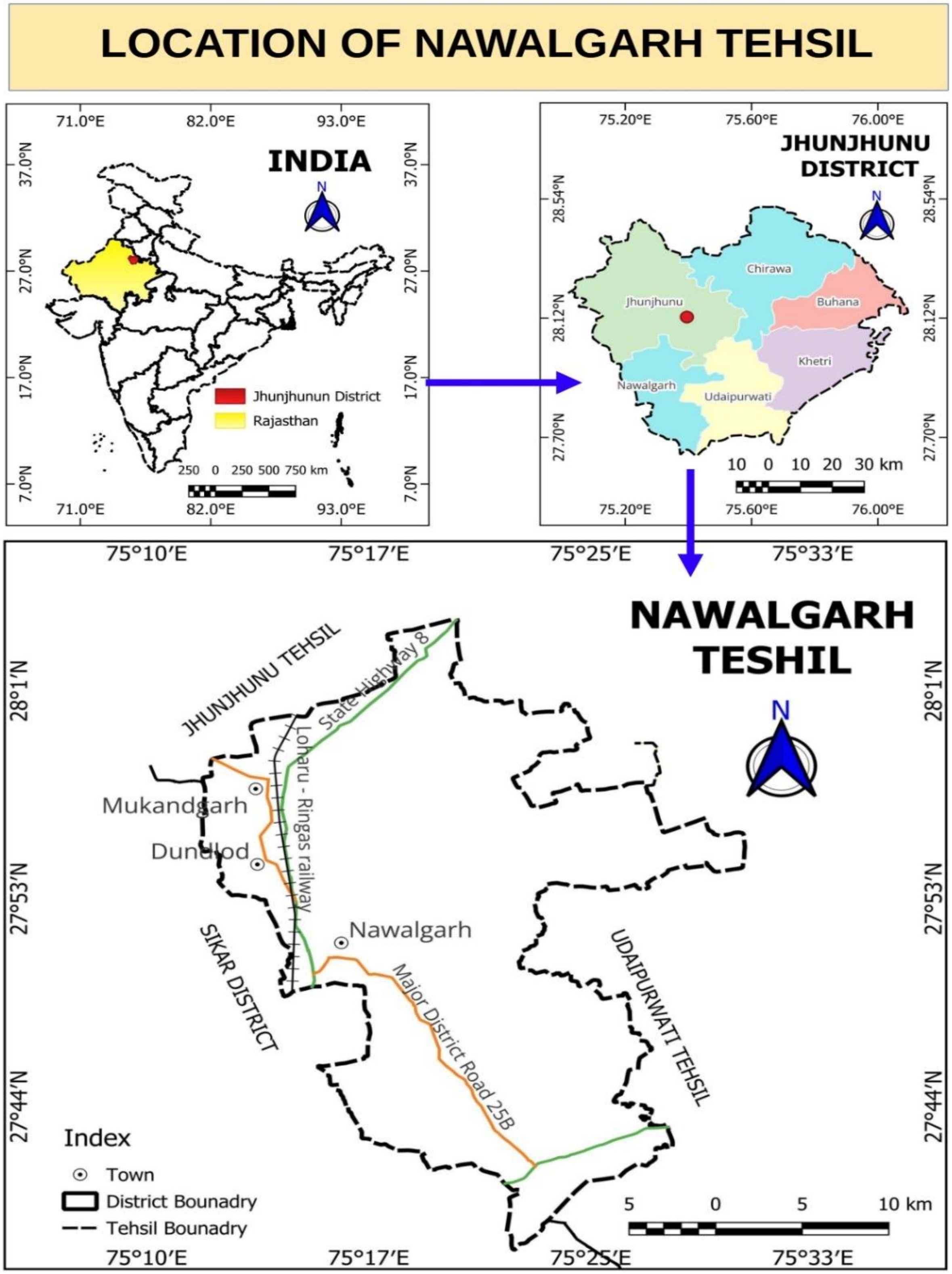

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

खेत में जैविक कृषि का प्रतिशत :

खेत में जैविक कृषि का स्तर यह समझने में मदद करता है कि रूपांतरण-काल के पश्चात किसान अपनी कुल कृषि भूमि में से कितनी भूमि पर रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक त्यागकर जैविक तकनीक अपना चुके हैं। सर्वेक्षण में 21.43 प्रतिशत (150) कृषकों ने बताया कि वे अपने संपूर्ण खेत (100 प्रतिशत भूमि) में जैविक कृषि कर रहे हैं। यह समूह पूर्ण रूपांतरण कर चुका है और जैविक तकनीकों में पर्याप्त अनुभव रखता होगा। 35.71 प्रतिशत (250) कृषकों ने बताया कि वे अपने खेत का लगभग 50 प्रतिशत क्षेत्र ही जैविक पद्धति से संचालित करते हैं। यह संकेत है कि वे चरणवार रूपांतरण कर रहे हैं। आधे खेत में अनुभव संग्रहित कर शेष भूमि पर भी विस्तार की योजना बना रहे हैं। 42.86 प्रतिशत (300) कृषकों ने बताया कि उनके यहां 30 प्रतिशत से कम भूमि में ही जैविक कृषि हो रही है। यह समूह अभी रूपांतरण के प्रारंभिक चरण में है या सीमित संसाधन एवं जोखिम भेद के कारण आंशिक रूप से ही जैविक पद्धति अपना पाया है। पूर्ण रूपांतरण करने वाले कृषक (21.43 प्रतिशत) के अनुभव को मॉडल फार्म के तौर पर पेश किया जाए, ताकि चरणबद्ध रूपांतरण कर रहे कृषकों को प्रेरणा एवं तकनीकी मार्गदर्शन मिल सके। 50 प्रतिशत क्षेत्र में जैविक कृषि कर रहे कृषकों के लिए समूहगत प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाएँ, जिसमें बीज उद्धार, कीट-प्रबंधन और जैविक खाद निर्माण की कार्यशाला हो, ताकि वे शेष भूमि पर भी आत्मविश्वास से जैविक पद्धति अपना सकें। जिन 42.86 प्रतिशत कृषकों ने केवल 30 प्रतिशत से कम भूमि में जैविक कृषि आरंभ की है, उन्हें आर्थिक प्रोत्साहन (सब्सिडी, अनुदान) एवं ऋण सुविधा प्रदान करके रूपांतरण-काल के जोखिमों को कम करना चाहिए। साथ ही, उन्हें परीक्षण कृषि प्लॉट उपलब्ध कराकर सीधा अनुभव दिलाया जाए। तालिका के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि खेत में जैविक कृषि का विस्तार अभी अधिकांश कृषकों के 50 प्रतिशत से कम भूमि तक सीमित है। पूर्ण रूपांतरण की दिशा में बढ़ने के लिए लक्षित प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और सफल मॉडलों का प्रसार आवश्यक है।

तालिका संख्या 1 : खेत में जैविक कृषि का प्रतिशत

विवरण	संख्या	प्रतिशत
100 प्रतिशत	**150**	21.43
50 प्रतिशत	**250**	35.71
30 प्रतिशत से कम	**300**	42.86
कुल	**700**	**100**

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण के आंकड़ों के आधार पर संकलित

International Journal of Multidisciplinary and Scientific Emerging ResearcH (IJMSERH)

IJMSERH

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

खेत में जैविक कृषि का प्रतिशत

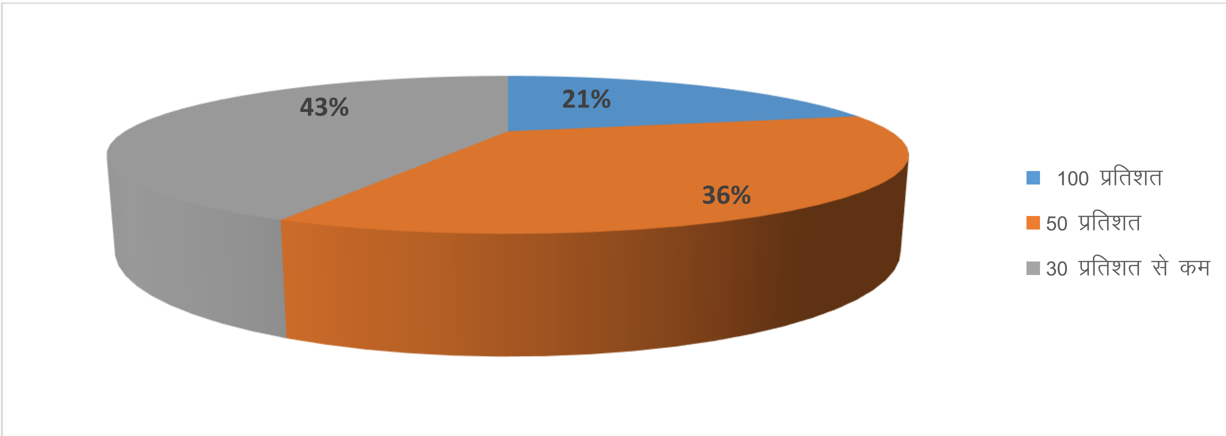

जैविक कृषि से अन्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि :

तालिका 2 जैविक कृषि से अन्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि की स्थिति बताती है। यह पता करना महत्वपूर्ण है कि जैविक खेती अपनाने से खेत ही नहीं, बल्कि उससे जुड़े सह-क्रियाकलापों (जैसे कम्पोस्ट निर्माण, बहुवटी उत्पादन, प्रसंस्करण, विपणन इत्यादि) में भी रोजगार उत्पन्न होते हैं या नहीं। 31.43 प्रतिशत (220) कृषकों ने बताया कि जैविक कृषि से अन्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। यह इस बात का संकेत है कि जैविक पद्धतियों के अंतर्गत अतिरिक्त कार्य (जैसे जैविक खाद निर्माण, कीट-प्रबंधन सेवाएँ, उपज का प्री–मुजिरण एवं विपणन) बढ़ने से ग्रामीण स्तर पर रोजगार सृजन हुआ। 48.57 प्रतिशत (340) कृषकों ने बताया कि जैविक कृषि से अन्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि नहीं हुई। संभवतः उनके यहां पारंपरिक एक-दो व्यक्ति आधारित परिवारिक कृषि चल रही है, जहाँ नई गतिविधियों के लिए बाहरी मजदूर या सेवाएँ शामिल नहीं हुईं। 20.00 प्रतिशत (140) कृषकों ने बताया कि जैविक कृषि से अन्य रोजगार के अवसरों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। यह समूह संभवतः उसी सीमा तक काम कर रहा है जहाँ उत्पादन-व्यवस्थापन में अतिरिक्त श्रम की आवश्यकता नहीं पड़ी। जिन कृषकों ने वृद्धि देखी, उनके अनुभव से पता चलता है कि जब समूह में कम्पोस्ट यार्ड, बीज प्रक्षेपण इकाइयां या जैविक उत्पाद प्रसंस्करण केन्द्र स्थापित होते हैं, तो स्थानीय स्तर पर सेवा एवं श्रम की मांग बढ़ती है। जिन कृषकों ने कोई वृद्धि न देखी, उन्हें सहकारी या स्वयं सहायता समूहों (SHG) के माध्यम से जैविक उत्पाद प्रसंस्करण तथा विपणन जैसी गतिविधियों में जोड़ने की आवश्यकता है, ताकि रोजगार के नए स्रोत खुलें। "बढ़त" वाले मॉडलों को क्षेत्रीय कार्यशालाओं में प्रस्तुत कर अन्य किसानों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जिससे जैविक कृषि से जुड़े सह-उद्योगों का विकास हो और ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त बने।

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

तालिका संख्या 2 : जैविक कृषि से अन्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि

विवरण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	**220**	31.43
नहीं	**340**	48.57
कोई परिवर्तन नहीं	**140**	20.00
कुल	**700**	**100**

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण के आंकड़ों के आधार पर संकलित

जैविक कृषि से अन्य रोजगार के अवसरों में वृद्धि

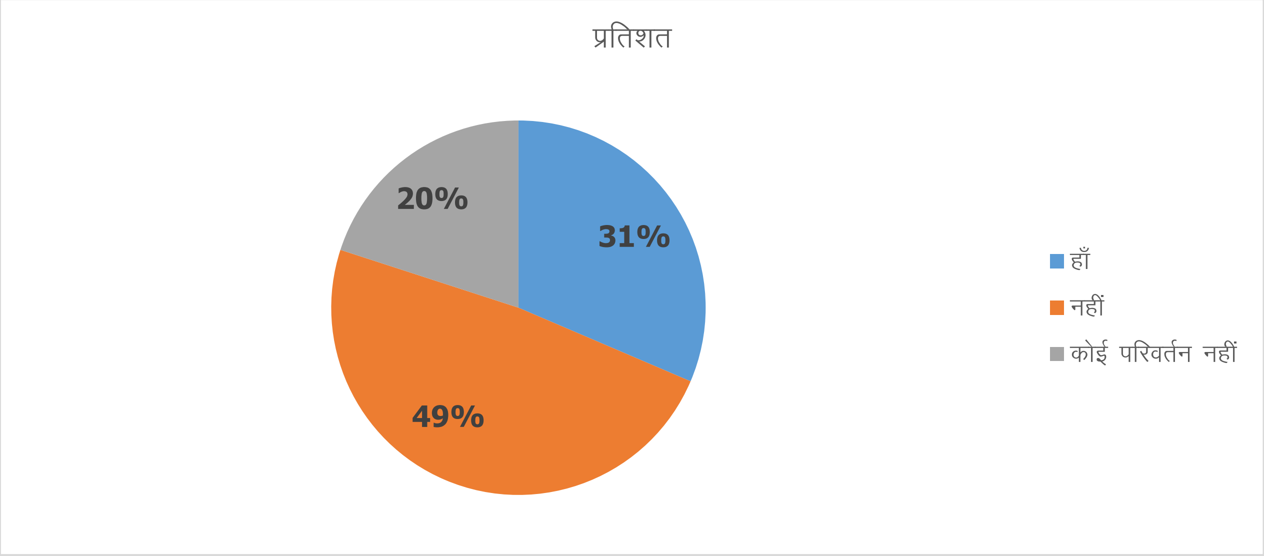

जैविक कृषि द्वारा वार्षिक आय में वृद्धि :

जैविक कृषि केवल पर्यावरण हितैषी तकनीक नहीं, बल्कि कृषक परिवारों की आर्थिक समृद्धि का भी माध्यम बन सकती है। उन्नत विपणन, प्रीमियम मूल्य और लागत-निर्धारण मॉडल से जैविक उत्पादों पर बेहतर मार्जिन संभव है। निम्न तालिका दर्शाती है कि किसानों की वार्षिक आय में वास्तविक कितनी वृद्धि हुई, जिससे हम यह आकलन कर सकते हैं कि जैविक रूपांतरण आर्थिक रूप से कितना लाभकारी साबित हो रहा है। तालिका संख्या 6.9 जैविक कृषि से किसानों की वार्षिक आय में हुई वृद्धि का स्तर दर्शाती है। वार्षिक आय में बदलाव यह संकेत देता है कि जैविक पद्धतियों से आर्थिक लाभ कितने किसानों तक पहुँच रहा है और किस हद तक वे स्वरोजगार और पारिवारिक आय में सुधार अनुभव कर रहे हैं। 64.29 प्रतिशत (450) कृषकों ने बताया कि जैविक कृषि से उनकी वार्षिक आय में वृद्धि "50,000 से कम" रही। यह दर्शाता है कि अधिकांश कृषक रूपांतरण-काल में अपेक्षित लाभ तो पा रहे हैं, लेकिन अभी भी उच्च आर्थिक लाभ प्राप्त करने की स्थिति में नहीं पहुँचे हैं। 17.14 प्रतिशत (120) कृषकों ने

International Journal of Multidisciplinary and Scientific Emerging ResearcH (IJMSERH)

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

बताया कि उनकी आय में वृद्धि लगभग ″50,000″ हुई। यह समूह मध्यवर्गीय लाभ का प्रतिनिधित्व करता है, जो जैविक तकनीकों के अनुकूलन और बाजार व्यवस्था को संतुलित कर पाने में सफल हुए हैं। 18.57 प्रतिशत (130) कृषकों ने बताया कि आय में वृद्धि ″50,000 से अधिक″ रही। यह संकेत है कि कुछ किसानों ने जैविक उत्पादों के बेहतर मूल्य, ब्रांडिंग व उपज की गुणवत्ता वृद्धि द्वारा उच्च आर्थिक लाभ हासिल किया है। जिन 64.29 प्रतिशत कृषकों ने अपेक्षाकृत कम वृद्धि देखी, उन्हें जैविक उपज के विपणन जैसे कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग, सीधी बिक्री मंच (एफ 2 सी) और नीचे से मूल्य संवर्धन इकाइयों में शामिल करने की आवश्यकता है, ताकि पैदावार का मूल्य बढ़े। 17.14 प्रतिशत कृषकों के लिए सहकारी बैंकों या कृषि विभाग द्वारा ऋण व अनुदान के पैकेज तैयार किए जाएँ, ताकि वे जैविक तकनीकों में और निवेश कर सकें और मध्यवर्ती लाभ को उच्च लाभ में परिवर्तित कर सकें। जिन 18.57 प्रतिशत कृषकों ने उच्च लाभ प्राप्त किया, उनके अनुभवकृजैसे ऑर्गेनिक निर्यात ग्रुप, उच्च मूल्य प्राप्त करने वाले स्थानीय ब्रांड निर्माण, मूल्य संवर्धन प्रसंस्करणकृको मॉडल फार्म के रूप में प्रदर्शित किया जाए, ताकि अन्य कृषक उनसे सीखकर आय उन्नयन कर सकें। तालिका के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जैविक कृषि से अधिकांश कृषकों को आय में मामूली वृद्धि मिली हैय उच्च लाभ प्राप्त करने वाले एक उल्लेखनीय अल्पसंख्यक समूह के अनुभवों को साझा कर, सभी के लिए आर्थिक लाभ को बढ़ाने हेतु लक्षित प्रशिक्षण, विपणन सहायता और वित्तीय प्रोत्साहन आवश्यक हैं।

तालिका संख्या 3 : जैविक कृषि द्वारा वार्षिक आय में वृद्धि

विवरण	संख्या	प्रतिशत
50,000 से कम	**450**	64.29
50,000	**120**	17.14
50,000 से अधिक	**130**	18.57
कुल	**700**	**100**

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण के आंकड़ों के आधार पर संकलित

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

जैविक कृषि द्वारा वार्षिक आय में वृद्धि

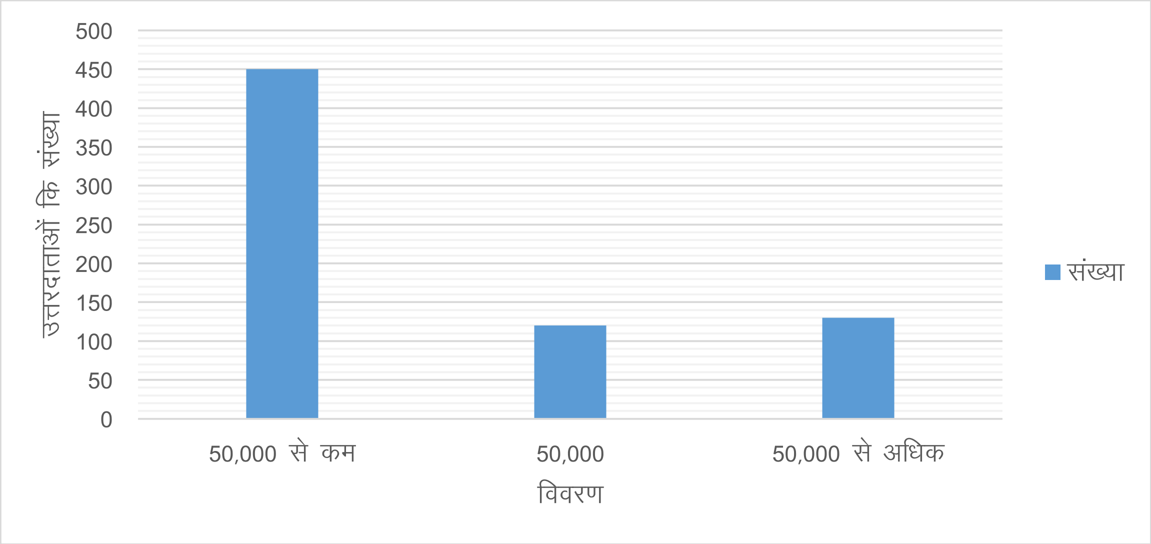

तहसील में जैविक कृषि उत्पादन का दृश्य

IJMSERH

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

जैविक उत्पादों को बेचने में कठिनाई का स्तर :

एक मजबूत विपणन तंत्र किसान की आय को स्थिर करता है, जबकि कमजोर चौनल और मूल्य वार्ता की कमी उन्हें आर्थिक रूप से वंचित कर सकती है। इस संदर्भ में 31.42 प्रतिशत (220) उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके लिए जैविक उपज बेचना अपेक्षाकृत सरल कार्य रहा। उन्होंने नियमित ग्राहक, लोकल ब्रांडिंग या सीधे उपभोक्ता (F2C) मॉडल से सहज बिक्री अनुभव करने की बात कही। दूसरी ओर, 64.28 प्रतिशत (450) कृषकों ने यह संकेत दिया कि जैविक उत्पादों का विपणन उनके लिए "कठिन कार्य" सिद्ध हुआ। मुख्य कारणों में उचित मंडी संपर्क का अभाव, रासायनिक उपज से प्रतिस्पर्धा और मूल्य निर्धारण में पारदर्शिता न होना शामिल रहा। 4. 28 प्रतिशत (30) कृषकों ने उल्लेख किया कि जैविक और रासायनिक उपज बेचने में "कोई अंतर नहीं" आया यानी उनके अनुभव में दोनों के विपणन में समान चुनौतियाँ और अवसर रहे। जिन 64-28 प्रतिशत कृषकों ने विपणन कठिन बताया, उन्हें किसान उत्पादक संगठनों (FPO) या सहकारियों के माध्यम से समेकित बिक्री चौनल उपलब्ध कराए जाने चाहिए, ताकि वे समूहबद्ध ढँग से बेहतर मूल्य वार्ता कर सकें। 31.42 प्रतिशत सफल कृषकों के मॉडल जैसे ई-मंडी में सीधे पंजीकरण, स्थानीय उपभोक्ता मेलों में भागीदारी को "प्रदर्शक केस स्टडी" के रूप में अन्य किसानों के साथ साझा किया जाए। उस छोटे समूह (4.28%) को भी मूल्य संवर्धन पैकिंग, ब्रांडिंग, प्रसंस्करण से अवगत करा कर विपणन में और सुधार के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। तालिका के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि जैविक उपज के विपणन में अधिकांश किसानों को चुनौतियाँ आती हैंय उन्हें संगठित मार्केटिंग चौनल, प्रदर्शक मॉडल और मूल्य संवर्धन तकनीकों के माध्यम से समर्थ बनाना आवश्यक है, ताकि जैविक खेती के आर्थिक लाभ सभी तक पहुँचें।

तालिका संख्या 4 : जैविक उत्पादों को बेचने में कठिनाई का स्तर

विवरण	संख्या	प्रतिशत
आसान कार्य	220	31.42
कठिन कार्य	450	64.28
कोई अन्तर नहीं	30	4.28
कुल	**700**	**100**

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण के आंकड़ों के आधार पर संकलित

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

जैविक उत्पादों को बेचने में कठिनाई का स्तर

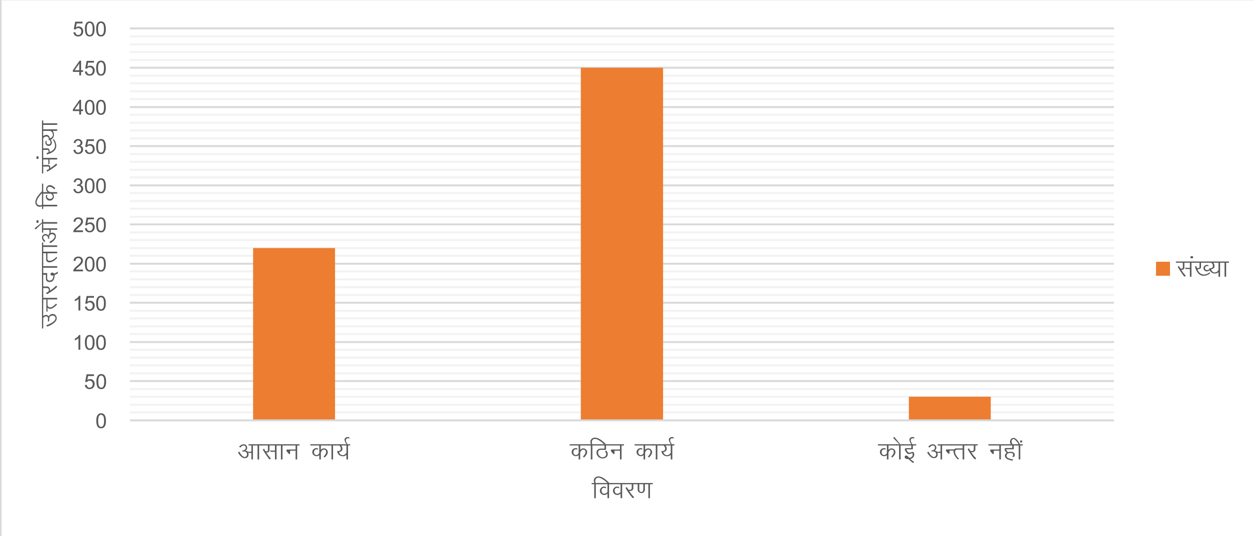

जैविक कृषि हेतु प्रशिक्षण :

प्रशिक्षण से किसानों को जैविक विधियों, कम्पोस्ट तकनीक, कीट-प्रबंधन व मिट्टी स्वास्थ्य के आधुनिक तरीकों का व्यावहारिक ज्ञान मिलता है, जिससे रूपांतरण-काल में आने वाली बाधाएँ कम होती हैं। इस संदर्भ में 50 प्रतिशत (350) उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें जैविक कृषि हेतु उचित प्रशिक्षण प्राप्त है। यह समूह तकनीकी क्रियान्वयन में स्वयं को सक्षम मानता है और उन्होंने कार्यशालाओं या क्षेत्र-दर्शन कार्यक्रमों में भाग लेकर आवश्यक कौशल विकसित किए हैं। 31.43 प्रतिशत (220) कृषकों ने कहा कि उन्हें जैविक कृषि संबंधी कोई प्रशिक्षण नहीं मिला। संभव है कि वे सरकारी या गैर-सरकारी प्रशिक्षण योजनाओं से अछूते रह गए हों, या अवसरों की कमी के कारण शामिल नहीं हो पाए हों। 18.57 प्रतिशत (130) कृषकों ने उत्तर दिया "जानकारी नहीं है", यानि वे प्रशिक्षण के अस्तित्व से भी अनभिज्ञ हैं और इस विषय में उन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता है। जिन 50 प्रतिशत कृषकों को प्रशिक्षण मिल चुका है, उनके अनुभव जैसे कंपोस्ट बुम्पर तैयार करना, जैविक कीटनाशक का प्रयोग इत्यादि को क्षेत्रीय गांव-स्तरीय प्रेक्षण केंद्रों में प्रदर्शित किया जाना चाहिए, ताकि अन्य कृषक प्रेरित हों। 31.43 प्रतिशत बिना प्रशिक्षण वाले कृषकों के लिए तुरंत मोबाइल वैन-आधारित माइक्रो-वर्कशॉप और ग्रामीण विस्तार कर्मचारियों द्वारा "द्वार-द्वार" प्रशिक्षण अभियान चलाना आवश्यक है। 18.57 प्रतिशत अनजान समूह को जागरूकता फैलाने के लिए रेडियो, लोकल भाषा में वीडियो ट्यूटोरियल व सरल ब्रोशर वितरण करके जैविक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी पहुँचाई जानी चाहिए। तालिका के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि केवल आधे कृषक ही जैविक कृषि का प्रशिक्षण प्राप्त कर पाए हैंय शेष को व्यापक एवं लक्षित प्रशिक्षण व जागरूकता अभियानों के माध्यम से शीघ्रतम जोड़ना चाहिए, ताकि पूरे समुदाय में जैविक रूपांतरण की प्रक्रिया प्रभावी ढंग से चल सके।

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

तालिका संख्या 5 : जैविक कृषि हेतु प्रशिक्षण

विवरण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	350	50.00
नहीं	220	31.43
जानकारी नहीं है	130	18.57
कुल	**700**	**100**

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण के आंकड़ों के आधार पर संकलित

जैविक उत्पादों कि खपत :

उपभोक्ता तक जैविक उपज पहुंचाने के विविध मार्ग जैसे लोकल मार्केट, ऑनलाइन बिक्री, सीधे संपर्क, संस्थागत क्रय, सुपरमार्केट तथा कृषि मंडीकृकिसान की आय और उपज की पहुंच दोनों पर प्रभाव डालते हैं। इस संदर्भ में 27.14 प्रतिशत (190) कृषकों ने बताया कि वे अपने जैविक उत्पाद "सभी ग्राहकों से सीधे संपर्क" के माध्यम से बेचते हैं। यह सबसे प्रचलित माध्यम है, क्योंकि इससे किसान को मध्यस्थ मुनाफा बचता है और उपभोक्ता तक ताजगी बनी रहती है। 21.42 प्रतिशत (150) उत्तरदाताओं ने "ऑनलाइन" बिक्री को मुख्य चौनल बताया। इस प्रवृत्ति से पता चलता है कि डिजिटल मंचों पर जैविक उपज की मांग बढ़ रही है, और किसान ई-मार्केटप्लेस या व्हाट्सएप ग्रुप के जरिए उपभोक्ता से सीधे जुड़ रहे हैं। समानतः 21.42 प्रतिशत (150) कृषकों ने "किसी संस्था" (जैसे सहकारी समिति, FPO) द्वारा खरीद को अपना विपणन मार्ग चुना। यह संकेत है कि संस्थागत क्रय से किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य और नियमित खरीद की गारंटी मिलती है। 14.28 प्रतिशत (100) कृषकों ने "सुपर मार्केट" और 14.28 प्रतिशत (100) ने "कृषि मंडी" में बिक्री की बात कही।

क्षेत्र अध्ययन के दौरान कृषकों से जानकारी एकत्रण

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

सुपरमार्केट में ब्रांडेड पैकेजिंग की मांग होती है, जबकि मंडी में पारंपरिक मूल्य वार्ता चलती है। केवल 1.42 प्रतिशत (10) कृषक "लोकल मार्केट" (गाँव या नजदीकी कस्बाई बाजार) पर निर्भर हैं, जो दर्शाता है कि सीधी ग्राम-मंडलीय बिक्री अब अपेक्षाकृत कम हो गई है। जिन 27.14 प्रतिशत कृषकों ने सीधे संपर्क को प्रमुख चौनल बताया, उनके सफल मॉडल जैसे खेत भ्रमण पर ग्राहक आमंत्रण, एफ 2 सी मीटअप अन्य किसानों के साथ साझा किए जाएँ, ताकि मध्यस्थ लागत बच सके। 21.42 प्रतिशत ऑनलाइन विक्रेताओं को ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर प्रमाणन (ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन) और लॉजिस्टिक्स सपोर्ट प्रदान करके इस चौनल को और मजबूत किया जाना चाहिए। संस्थागत क्रय (21.42 प्रतिशत) बढ़ाने हेतु स्थानीय थ्च्े को जैविक उत्पादों के लिए कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग मॉडल में सब्सिडी व तकनीकी सहायता दें, ताकि किसान समूहबद्ध रूप से बड़े पैमाने पर विक्रय कर सकें। सुपरमार्केट एवं मंडी विक्रेताओं (दोनों 14.28 प्रतिशत) को मूल्य संवर्धन पैकेजिंग, लेबलिंग व ब्रांडिंग और मंडी नेटवर्क डिजिटलीकरण पर प्रशिक्षण दें, जिससे मूल्य वार्ता में सुधार हो। 1.42 प्रतिशत लोकल मार्केट पर आश्रित कृषकों को उपभोक्ता जागरूकता कैम्प व ग्राम स्तर पर पॉप-अप स्टॉल लगाकर बिक्री विस्तार के वैकल्पिक माध्यम दिखाए जाएँ। तालिका के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि सीधे संपर्क (27.14 प्रतिशत) और ऑनलाइन (21.42 प्रतिशत) चौनल जैविक उपज के प्रमुख मार्ग हैंय सुपरमार्केट, मंडी और संस्थागत क्रय को बढ़ावा देने के लिए मूल्य संवर्धन, तकनीकी सहायता व डिजिटल उपकरण उपलब्ध कराना आवश्यक है, ताकि सभी विपणन चौनल संतुलित रूप से विकसित हों।

तालिका संख्या 6 : जैविक उत्पादों कि खपत

विवरण	संख्या	प्रतिशत
लोकल मार्केट	10	1.42
आनलॉइन	150	21.42
सीधे सम्पर्क द्वारा	190	27.14
किसी संस्था मार्फत	150	21.42
सुपर मार्केट	100	14.28
कृषि मण्डी	100	14.28
कुल	**700**	**100**

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण के आंकड़ों के आधार पर संकलित

IJMSERH

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

जैविक उत्पादों कि खपत

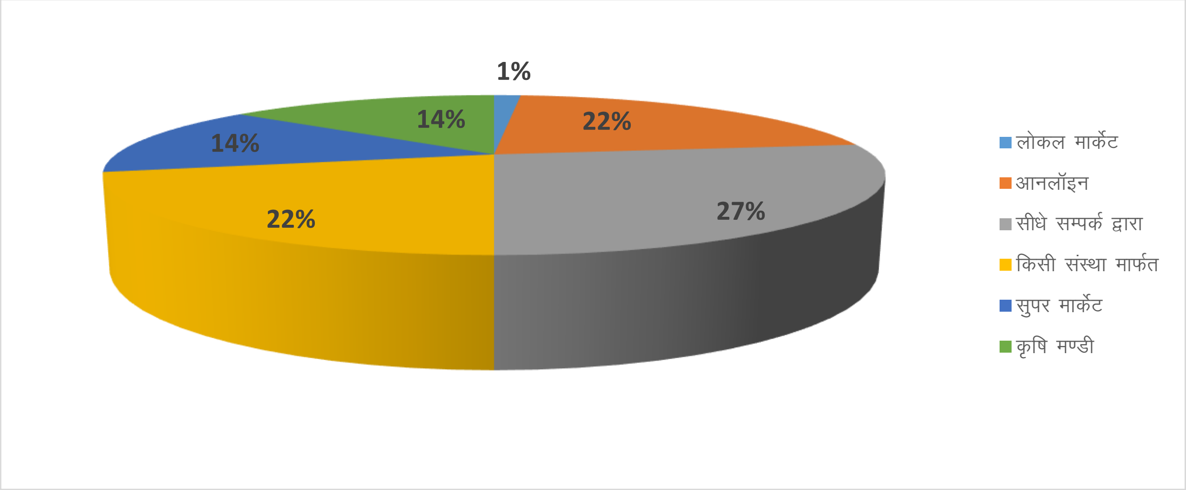

भूमि की उर्वराशक्ति को को बनाये रखने हेतु उपाय

तालिका संख्या 7 यह दर्शाती है कि जैविक कृषि में मिट्टी की उर्वरता शक्ति बनाए रखने के लिए किसान कौन-से प्रमुख उपाय अपना रहे हैं। जैविक प्रणाली में रासायनिक उर्वरक त्यागने के कारण मिट्टी में पोषक तत्व चक्रण और संरचना को बनाए रखने हेतु विविध जैविक प्रबंधन प्रथाएँ अवलंबित करनी पड़ती हैं। 34.29 प्रतिशत (240) कृषकों ने बताया कि वे "खाद के उपयोग से" मिट्टी की उर्वरता बनाए रखते हैं। इस समूह में नियमित रूप से कंपोस्ट, गोबर खाद या हरी खाद का अनुप्रयोग शामिल है, जो मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ बढ़ा कर पोषक तत्वों की उपलब्धता सुनिश्चित करता है। 17.14 प्रतिशत (120) कृषकों ने कहा कि वे "फसलों के हेर–फेर (crop rotation) द्वारा" उर्वरता बनाए रखते हैं। उपयुक्त फसल चक्र में दलहनी व हरी खाद फसलों का समावेश मिट्टी में नाइट्रोजन संतुलन स्थापित करता है। 12.86 प्रतिशत (90) कृषकों ने "फसल संयोजन (intercropping) द्वारा" उर्वरता बनाए रखने की बात कही, जहां दलहनी या अन्य सह-उपज वाली फसलों के साथ प्राथमिक फसल उगाकर मिट्टी समृद्ध की जाती है। 11.43 प्रतिशत (80) कृषकों ने "जुताई द्वारा" उर्वरता बनाए रखने को प्राथमिक उपाय बताया, यानी पारंपरिक हल-जुताई या गहरी जुताई से मिट्टी में वायुवीजन बढ़ाकर जैविक क्रियाओं को प्रोत्साहित किया जाता है। 24.29 प्रतिशत (170) कृषकों ने "अन्य तरीकों से" उर्वरता बनाए रखने की सूचना दी, जिसमें बायोचार उपयोग, मल्चिंग, मृदा कवरेज (cover cropping) या जैव-इनोकुलेंट (bio-inoculants) शामिल हो सकते हैं। "खाद के उपयोग" (34.29 प्रतिशत) वाले कृषकों के सफल कंपोस्ट मिश्रण अनुपात एवं अनुप्रयोग अनुसूची को मॉडल फार्म में प्रदर्शित किए जाने की आवश्यकता है, ताकि गुणवत्ता एवं मात्रा दोनों में संतुलन बना रहे।

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|
|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||
DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

17.14 प्रतिशत "फसल हेर-फेर" करने वाले कृषकों के फसल चक्र प्रोटोकॉलकृजैसे गेहूँ/मक्का के साथ मूंग या चना को क्षेत्रीय कार्यशाला में ध्यान दिया जाने की आवश्यकता है, ताकि यह पद्धति व्यापक रूप से अपनाई जा सके। 12.86 प्रतिशत "फसल संयोजन" समूह के इंटरक्रॉपिंग मॉडलों को अन्य कृषकों के साथ प्रदर्शित किए जाने की आवश्यकता है, ताकि वे उपज में विविधता और मिट्टी स्वास्थ्य दोनों लाभ देख सकें। 11.43 प्रतिशत "जुताई" आधारित कृषकों के लिए न्यून-गहराई जुताई और संरक्षित जुताई (zero/minimum tillage) के तुलनात्मक अध्ययन चलाई जाने की आवश्यकता है, जिससे श्रम लागत और मिट्टी क्षरण दोनों में कमी लाई जा सके। 24.29 प्रतिशत "अन्य तरीकों" वाले समूह को बायोचार, मल्चिंग और जैव-इनोकुलेंट के प्रभावों पर प्रायोगिक प्लॉट में डेटा संग्रह की सुविधाएं प्रदान करने की आवश्यकता है, तथा इन तकनीकों के परिणामों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। तालिका के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि किसान मिट्टी उर्वरता बनाए रखने हेतु विविध जैविक उपाय अपना रहे हैं। इन प्रथाओं के सफल मॉडलों का व्यापक प्रदर्शन, लक्षित प्रशिक्षण और प्रायोगिक तुलनात्मक अध्ययन सुनिश्चित किए जाने की आवश्यकता है, ताकि मिट्टी स्वास्थ्य दीर्घकालिक रूप से स्थिर रहे।

तालिका संख्या 7 : भूमि की उर्वराशक्ति को को बनाये रखने हेतु उपाय

विवरण	**संख्या**	**प्रतिशत**
खाद के उपयोग से	**240**	34.29
फसलो के हेर फेर द्वारा	**120**	17.14
फसल संयोजन द्वारा	**90**	12.86
जुताई द्वारा	**80**	11.43
अन्य तरीके से	**170**	24.29
कुल	**700**	**100**

स्रोत – क्षेत्र सर्वेक्षण के आंकड़ों के आधार पर संकलित

भूमि की उर्वराशक्ति को को बनाये रखने हेतु उपाय

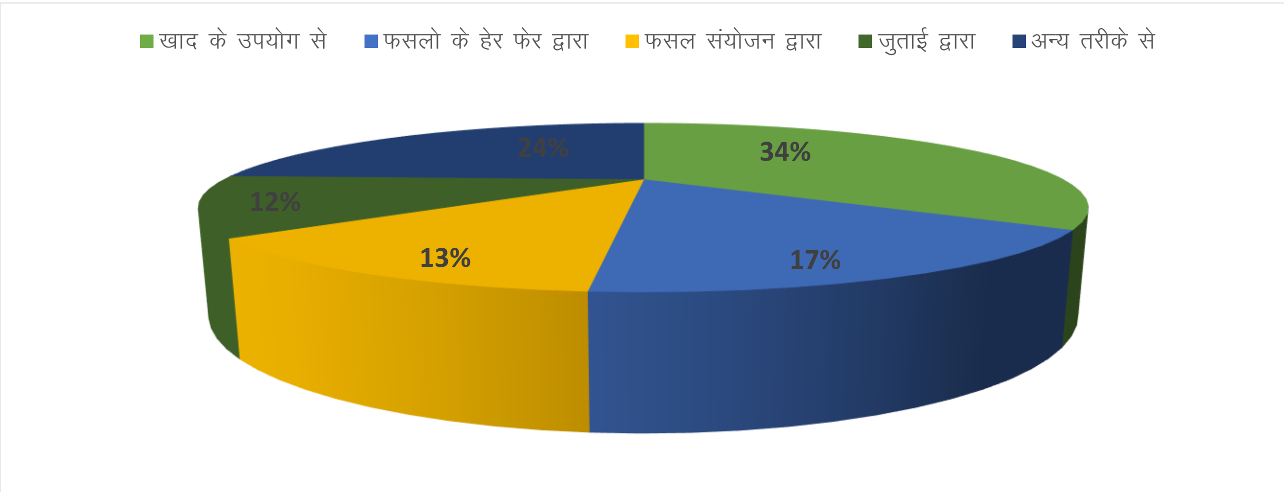

| ISSN: 2349-6037 | www.ijmserh.com ||Impact Factor: 9.274||Quarterly, Peer Reviewed & Refereed Journal|

|| Volume 13, Issue 1, January-March 2025 ||

DOI: 10.15662/IJMSERH.2025.1301047

निष्कर्ष :

नवलगढ़ तहसील, जो राजस्थान की भौगोलिक और पर्यावरणीय विविधता का एक प्रमुख उदाहरण है, क्षेत्रीय जलवायु, मृदा संरचना एवं पारंपरिक कृषि पद्धतियों के संदर्भ में विशिष्ट महत्व रखती है। यहाँ की बढ़ती जल–संकट, भूमि क्षरण तथा रासायनिक उर्वरकों के अति–उपयोग से उत्पन्न मृदा प्रदूषण ने पारंपरिक खेती की सीमाओं को चुनौती दी है। इन परिप्रेक्ष्यों में जैविक कृषि ने न केवल मिट्टी के स्वास्थ्य को पुनःसंतुलित करने की संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं, बल्कि किसानों को दीर्घकालीन आर्थिक स्थिरता एवं पर्यावरण–हितैषी कृषि प्रणालियों की ओर प्रेरित भी किया है। अध्ययन के दौरान यह भी देखा गया कि किसानों की जैविक खेती के प्रति जागरूकता स्तर में साक्षरता, आयु, भूमि–स्वामित्व एवं पूर्व अनुभव जैसे कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरणतः, उच्च शिक्षा प्राप्त एवं युवा किसान जैविक तकनीकों को तेजी से अपना रहे हैं, जबकि वरिष्ठ एवं सीमित संसाधनों वाले किसान पारंपरिक विधियों पर निर्भर रहना अधिक सुरक्षित मानते हैं। किसानों द्वारा विभागीय प्रशिक्षण, आर्थिक सब्सिडी एवं प्रमाणन प्रक्रियाओं के प्रति आशंकाएँ भी सामने आईं, जिनका प्रभाव जैविक कृषि अपनाने की दर पर प्रत्यक्ष रूप से देखा गया।

Refrences:

1. Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority. (2020). *National Programme for Organic Production: Standards and guidelines*. New Delhi: APEDA.
2. Behl, R. K. (2015). *Sustainable agriculture: Principles, processes and prospects*. New Delhi: Sage Publications.
3. Creswell, J. W. (2014). *Research design: Qualitative, quantitative, and mixed methods approaches* (4th ed.). Thousand Oaks, CA: Sage Publications.
4. Food and Agriculture Organization of the United Nations. (2017). *The state of organic agriculture: Key findings*. Rome: FAO.
5. Government of Rajasthan, Department of Agriculture. (2020). *Annual report 2019–20*. Jaipur: Government of Rajasthan.
6. Gupta, S. (2016). Market potential and value chain analysis of organic produce in India. *Journal of Agricultural Economics, 71*(3), 487–502. https://doi.org/10.1111/1477-9552.121xx
7. Meena, L. M., & Yadav, B. S. (2020). Soil health management through organic amendments in Rajasthan. *Journal of Arid Land Research and Development, 31*(1), 45–53.
8. NITI Aayog. (2021). *Organic farming in India: Policy framework and recommendations*. New Delhi: Government of India.
9. Sharma, R. K., & Joshi, P. (2019). Adoption and challenges of organic farming in Rajasthan. *Indian Journal of Organic Farming, 7*(1), 15–24.
10. Singh, A., & Singh, S. (2018). Constraints faced by farmers in organic agriculture in arid zones. *Rajasthan Journal of Agricultural Sciences, 35*(3), 77–85.

International Journal of Multidisciplinary and Scientific Emerging Research (IJMSERH)

Impact Factor: 9.274

ijmserh@gmail.com www.ijmserh.com